

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए:

i. सगुण भक्ति काव्यधारा

सगुण भक्ति काव्यधारा हिंदी साहित्य के भक्ति काल की एक प्रमुख शाखा है, जिसमें ईश्वर के साकार रूप की उपासना की जाती है। 'सगुण' का अर्थ है गुणों सहित, अर्थात् ईश्वर को किसी विशेष रूप, गुण, लीला और नाम से युक्त मानकर उसकी भक्ति करना। इस धारा के कवियों ने ईश्वर को मनुष्य के समान प्रेम, करुणा, क्रोध आदि मानवीय भावों से युक्त माना और उसे अवतार के रूप में स्वीकार किया।

सगुण भक्ति काव्यधारा को मुख्य रूप से दो शाखाओं में विभाजित किया गया है:

1. **रामाश्रयी शाखा:** इस शाखा के कवियों ने भगवान राम को अपना आराध्य माना। तुलसीदास इस शाखा के सर्वप्रमुख कवि हैं, जिन्होंने 'रामचरितमानस' जैसे महाकाव्य की रचना कर भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला। अन्य प्रमुख कवियों में अग्रदास और नाभादास शामिल हैं।
2. **कृष्णाश्रयी शाखा:** इस शाखा के कवियों ने भगवान कृष्ण को अपना आराध्य माना। सूरदास इसके सबसे महत्वपूर्ण कवि हैं, जिन्होंने 'सूरसागर' में कृष्ण की बाल लीलाओं और प्रेम लीलाओं का अद्भुत वर्णन किया है। मीराबाई, रसखान और नंददास भी इस शाखा के प्रमुख कवि हैं।

सगुण भक्ति काव्यधारा ने जनमानस में भक्ति और नैतिकता का संचार किया, सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया और हिंदी साहित्य को समृद्ध किया।

iii. संत तिरुवल्लुवर

संत तिरुवल्लुवर प्राचीन तमिल साहित्य के एक महान संत कवि थे, जिन्हें तमिल संस्कृति और नैतिकता का प्रतीक माना जाता है। उनका काल निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है, लेकिन सामान्यतः उन्हें ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से ईसा की आठवीं शताब्दी के बीच का माना जाता है। वे दक्षिण भारत के सबसे सम्मानित संतों में से एक हैं।

उनकी एकमात्र ज्ञात रचना 'तिरुक्कुरल' है, जिसे तमिल वेद या 'विश्व वेद' भी कहा जाता है। यह एक द्विपदी (कपलट) काव्य संग्रह है, जिसमें 1330 'कुरल' (द्विपदियाँ) हैं, जिन्हें 133 अध्यायों में विभाजित किया गया है। 'तिरुक्कुरल' तीन मुख्य भागों में बंटा हुआ है:

1. **अरम (धर्म):** इसमें नैतिकता, सदाचार, गृहस्थ जीवन और त्याग जैसे विषयों पर उपदेश दिए गए हैं।
2. **पोरुल (अर्थ):** इसमें राजनीति, शासन, धनार्जन और सामाजिक व्यवस्था से संबंधित सिद्धांतों का वर्णन है।
3. **कामम (काम):** इसमें प्रेम और वैवाहिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

तिरुवल्लुवर ने अपनी रचना में किसी विशेष धर्म या संप्रदाय का उल्लेख नहीं किया है, बल्कि सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों और मानवीय आचरण के सिद्धांतों पर जोर दिया है। 'तिरुक्कुरल' की शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और इसने तमिल साहित्य, संस्कृति और दर्शन पर अमिट छाप छोड़ी है।

2. तुलसीकृत रामचरितमानस के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालिए।

तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और समाज का एक जीवंत दर्पण है। इसका सांस्कृतिक महत्व अत्यंत व्यापक और गहरा है, जिसे निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

1. **आदर्शों की स्थापना:** 'रामचरितमानस' ने राम के रूप में एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श राजा और आदर्श मित्र का चित्रण किया है। सीता के रूप में आदर्श पत्नी, भरत के रूप में आदर्श भाई, हनुमान के रूप में आदर्श भक्त और सेवक के चरित्रों ने भारतीय समाज में नैतिक और पारिवारिक मूल्यों की स्थापना की।
2. **सामाजिक समरसता का संदेश:** तुलसीदास ने अपनी रचना में जाति, वर्ग और लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव का विरोध किया। उन्होंने शबरी, निषादराज गुह और गिद्धराज जटायु जैसे निम्न वर्ग और भिन्न जातियों के पात्रों को राम के प्रेम और सम्मान का पात्र बनाकर सामाजिक समरसता का संदेश दिया।
3. **लोकप्रियता और जनभाषा का प्रयोग:** 'रामचरितमानस' की रचना अवधी जैसी लोकभाषा में हुई, जिससे यह आम जनता तक आसानी से पहुँच सका। इसने संस्कृत के पंडितों तक सीमित ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया और भक्ति आंदोलन को एक नई दिशा दी।
4. **नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान:** यह ग्रंथ नैतिकता, धर्म, कर्तव्यपरायणता और भक्ति के सिद्धांतों का प्रचार करता है। इसके पाठ से लोगों में धैर्य, संतोष, परोपकार और ईश्वर के प्रति आस्था बढ़ती है, जिससे उनका आध्यात्मिक और नैतिक उत्थान होता है।
5. **कला और साहित्य पर प्रभाव:** 'रामचरितमानस' ने हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर गहरा प्रभाव डाला है। इसकी चौपाइयाँ, दोहे और सोरठे आज भी लोकगीतों, भजनों और प्रवचनों का अभिन्न अंग हैं। इसने रामलीला जैसी लोकनाट्य परंपराओं को भी जन्म दिया, जो भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

6. **राष्ट्रीय एकता का सूत्र:** यह ग्रंथ भारत के विभिन्न क्षेत्रों में समान रूप से लोकप्रिय है। राम और रामकथा के प्रति श्रद्धा ने विभिन्न भाषाई और क्षेत्रीय समुदायों को एक सूत्र में बांधने का काम किया है, जिससे राष्ट्रीय एकता को बल मिला है।

संक्षेप में, 'रामचरितमानस' ने भारतीय समाज को एक नैतिक और सांस्कृतिक आधार प्रदान किया है, जो सदियों से लोगों का मार्गदर्शन करता आ रहा है।

3. कबीर के काव्य में सामाजिक कुरीतियों पर किए गए व्यंग्य को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

संत कबीरदास भक्ति काल के निर्गुण काव्यधारा के प्रमुख कवि थे, जिन्होंने अपनी वाणी में सामाजिक कुरीतियों, आडंबरों और धार्मिक पाखंडों पर तीखा व्यंग्य किया। वे समाज सुधारक के रूप में भी जाने जाते हैं, जिन्होंने अपनी सीधी और खरी बातों से लोगों को जगाने का प्रयास किया। उनके काव्य में सामाजिक कुरीतियों पर किए गए व्यंग्य को निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है:

1. **जाति-पाति का खंडन:** कबीर ने जाति-पाति के भेदभाव को सिरे से नकार दिया। उन्होंने मनुष्य को उसकी जाति से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से श्रेष्ठ माना।
 - **उदाहरण:** "जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान। मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।"
 - इस दोहे में वे कहते हैं कि साधु की जाति नहीं पूछनी चाहिए, बल्कि उसके ज्ञान को महत्व देना चाहिए, जैसे तलवार का मोल होता है, म्यान का नहीं।
2. **धार्मिक आडंबरों पर व्यंग्य:** कबीर ने दोनों धर्मों (हिंदू और मुस्लिम) में व्याप्त बाहरी आडंबरों, दिखावे और पाखंडों पर करारा प्रहार किया।

- **मूर्ति पूजा का विरोध:** "पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार। ताते यह चाकी भली, पीस खाए संसार।।"
 - वे कहते हैं कि यदि पत्थर पूजने से ईश्वर मिलते हैं, तो मैं पहाड़ पूजने लगूँ। इससे तो चक्की भली है, जो आटा पीसकर संसार का पेट भरती है।
 - **तीर्थ यात्रा और व्रत का विरोध:** "माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर। कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।"
 - वे माला फेरने जैसे बाहरी कर्मकांडों को व्यर्थ बताते हुए मन की शुद्धि और विचारों के परिवर्तन पर जोर देते हैं।
 - **नमाज और अजान पर व्यंग्य (मुस्लिमों के संदर्भ में):** "कांकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय। ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।"
 - वे मस्जिद में ऊंची आवाज में अजान देने पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि क्या खुदा बहरा हो गया है, जो उसे इतनी ऊंची आवाज में पुकारना पड़ता है।
3. **बाहरी वेशभूषा और तिलक-छाप का विरोध:** कबीर ने बाहरी वेशभूषा और तिलक लगाने जैसे दिखावों को भी व्यर्थ बताया।
- **उदाहरण:** "तिलक लगाए, माला धरे, साधु कहावे सोय। भीतर कुमति न जाई, बाहर ज्ञानी होय।।"
 - वे कहते हैं कि जो तिलक लगाकर और माला पहनकर साधु कहलाता है, उसके भीतर की कुबुद्धि नहीं जाती, भले ही वह बाहर से ज्ञानी दिखे।
4. **अंधविश्वास और रूढ़ियों पर प्रहार:** उन्होंने समाज में प्रचलित अंधविश्वासों और रूढ़ियों को भी चुनौती दी।

- **उदाहरण:** "कबीरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ। जो घर फूँके अपना, चले हमारे साथ।।"
- वे कहते हैं कि जो व्यक्ति अपने अहंकार और सांसारिक मोह को त्यागने को तैयार है, वही उनके मार्ग पर चल सकता है।

कबीर का व्यंग्य केवल आलोचना के लिए नहीं था, बल्कि उसका उद्देश्य समाज को सही मार्ग दिखाना और लोगों को वास्तविक भक्ति तथा मानवीय मूल्यों की ओर प्रेरित करना था। उनकी भाषा सीधी, सरल और जनसाधारण की समझ में आने वाली थी, जिससे उनके संदेश का प्रभाव और भी गहरा हो गया।

4. गुरु नानक देव की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

गुरु नानक देव सिख धर्म के संस्थापक और पहले गुरु थे, जिन्होंने 15वीं शताब्दी में सामाजिक समानता, सहिष्णुता और मानवीय मूल्यों पर आधारित एक क्रांतिकारी सामाजिक चेतना का सूत्रपात किया। उनकी शिक्षाएँ और उपदेश तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों, भेदभाव और धार्मिक कट्टरता के खिलाफ एक सशक्त आवाज थे। उनकी सामाजिक चेतना के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:

1. **मानवीय समानता और भाईचारे का संदेश:** गुरु नानक देव ने जाति, धर्म, लिंग या वर्ग के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव को अस्वीकार किया। उन्होंने 'एक पिता के एकस के हम बालक' (हम सब एक ही ईश्वर के बच्चे हैं) का संदेश दिया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सभी मनुष्य समान हैं।
 - उन्होंने 'संगत' (सामूहिक प्रार्थना) और 'पंगत' (सामूहिक भोजन, लंगर) की परंपरा शुरू की, जहाँ सभी लोग बिना किसी भेदभाव के एक साथ बैठते और भोजन करते थे। यह सामाजिक समानता का एक सशक्त प्रतीक था।

2. **जाति-प्रथा का खंडन:** गुरु नानक ने भारत में गहरी जड़ें जमा चुकी जाति-प्रथा की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि मनुष्य की पहचान उसके कर्मों से होती है, न कि उसकी जाति से।
 - उन्होंने अछूतों और निम्न समझी जाने वाली जातियों के लोगों को भी गले लगाया और उन्हें समान सम्मान दिया।
3. **धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय:** गुरु नानक ने धार्मिक कट्टरता और पाखंड का विरोध किया। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों के बाहरी आडंबरों को त्याज्य बताया और आंतरिक शुद्धता, प्रेम तथा ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति पर जोर दिया।
 - उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश दिया और दोनों समुदायों के लोगों को एक साथ लाने का प्रयास किया। उनका प्रसिद्ध कथन है, "न कोई हिंदू, न कोई मुसलमान, सब इंसान।"
4. **स्त्री-पुरुष समानता:** गुरु नानक ने महिलाओं को समाज में पुरुषों के समान दर्जा देने की वकालत की। उन्होंने उस समय की पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के प्रति होने वाले भेदभाव की निंदा की।
 - उन्होंने कहा, "सो क्यों मंदा आखिए जित जम्मे राजान" (उसे बुरा क्यों कहें, जिससे राजा जन्म लेते हैं)। यह कथन महिलाओं के सम्मान और महत्व को दर्शाता है।
5. **कर्मठता और ईमानदारी पर जोर:** उन्होंने निष्क्रियता का विरोध किया और ईमानदारी से श्रम करने तथा अपनी कमाई से जीवन यापन करने का संदेश दिया। उन्होंने 'किरत करो, नाम जपो, वंड छको' (ईमानदारी से काम करो, ईश्वर का नाम जपो और जो कमाओ उसे बांटो) का सिद्धांत दिया। यह सामाजिक जिम्मेदारी और परोपकार का प्रतीक है।

6. **सेवा और परोपकार:** गुरु नानक ने निस्वार्थ सेवा (सेवा) और दूसरों की भलाई (परोपकार) को भक्ति का अभिन्न अंग माना। उन्होंने गरीबों, जरूरतमंदों और बीमारों की सहायता करने को ईश्वर की सच्ची उपासना बताया।

Duhive